

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□

जनसत्ता 19 सितंबर, 2014: मध्यप्रदेश व्यावसायिकपरीक्षा मंडल द्वारा प्रतियोगिता आयोजित प्री-मेडिकल टेस्ट (पी मटी) में हुए घोटाले में अभी तक लगभग साठ तीनों सौ वदियार्थियों की परीक्षा और करीब सत्तर छात्र-छात्राओं के प्रवेश के नरिस्त कर दिया है। इनमें कुछ तो पाठ्यक्रम के दूसरे या तीसरे वर्ष में अध्ययनरत थे। कुछ बच्चे और उनके अभिभावक प्यार हैं। सही है कि इस तरीके से प्रवेश पाने वाले वदियार्थी इस डगिरी के योग्य नहीं थे। कमजोर व्यवस्था का फयदा उठा कर इन लोगों ने पैसे के बल पर प्रवेश पा लिया। लेकिन यह भी सच है कि वे बच्चे, जो जीवन के बहुमूल्य सोलह-सत्रह वर्ष की मेहनत करके आये थे, क्या दोषी हैं? संदेह के घेरे में आये वदियार्थियों की दो-तीन श्रेणियां हो सकती हैं। पहली वह, जसमें बच्चों के पता था कि वे यह परीक्षा पास नहीं कर पाएंगे। ऐसे में उन्होंने दलालों से संपर्क किया और व्यवस्था की कमजोरी का फयदा उठाते हुए किसी तरह टेस्ट पास कर प्रवेश पा लिया। दूसरे, वे छात्र-छात्राएँ हैं, जिन्हें खुद कुछ पता नहीं था, लेकिन उनके अभिभावकों ने उच्च महत्त्वाकांक्षा के पूरा करने के लिये दलालों से संपर्क किया और अपनी कली कमाई के सहारे उन्हें टेस्ट में पास कराया और प्रवेश दिला दिया। तीसरी श्रेणी उनकी है, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शायद शामिल न हों, लेकिन शंक के घेरे में आ गये हैं। इन तीनों श्रेणियों के वदियार्थी आगे के अध्ययन से वंचित हो गये हैं। इसमें जो भी दोषी है, उन्हें सजा मिलना चाहिए, लेकिन उन बच्चों की मनोदशा क्या होगी, जो कशिरावस्था से गुजर रहे हैं। जांच के बाद अगर पता चलता है कि वे दोषी नहीं हैं, तो उनके भविय क क्या होगा?

कशिरावस्था में बच्चे अपनी स्वतंत्रता से वकिस करने का प्रयास करते हैं। कस्वस्थ सामाजिक वातावरण मलिन से कशिरा अपने जीवन की सीमायें ठीक से चिन्ता पाता है। लेकिन इसके उलट अगर उसे नकारात्मक माहौल मलि, तो वह समाज के लिये समस्या भी बन सकता है। इस घोटाले के दायरे में आये लगभग सभी बच्चे कशिरावस्था से गुजर रहे हैं। इनकी मन:स्थिति क्या होगी, अंदाजा लगाया जा सकता है। सब जानते हैं कि हमारे यहां जांच और न्यायिक प्रक्रिया की चाल कतिनी धीमी है। यहां त्वरति अदालतों में भी पैसले सत्तर-अस्सी सुनवाई के बाद कडे वरष में आते हैं। तो क्या इस लंबी प्रक्रिया और पैसले के इंतजार में ये कशिरा अपने जीवन के नरिणायक समय के यों ही जाया होने दें? प्राकृतिक न्याय क्या इसकी इजाजत देता है? तो फिर क्या ऐसे उपाय हैं, जो इन बच्चों को झंझावात से बाहर नकिल सकें?

कयदे से अलग से कस्वतंत्र जैसी द्वारा फिर से इन सभी वदियार्थियों की प्रवेश जांच परीक्षा ली जानी चाहिए। और जो उसमें उत्तीरण होते हैं, उन्हें दोष मुक्त कर आगे का सफर तय करने का मौक दिया जाना चाहिए। क और शर्त लगाई जा सकती है। इन कशिरों से ग्रामीण क्षेत्र में दस वर्ष तक सेवा करने का बांड भरवाया जाना चाहिए। इसके अलावा, जो अभिभावक दोषी करार दिये जाते हैं, उन्हें कनून के मुताबिक सजा दी जानी चाहिए। मेरा मकसद किसी भी तरह से किसी अपराध की वकलत करना नहीं है। लेकिन आमतौर पर कशिरावस्था से गुजर रहे या अभी-अभी इस उमर से नकिले बच्चों का यह अपराध ऐसा भी नहीं है, जसके चलते उनका समूचा भविय बरबाद कर दिया जा।

फेसबुक पेज के लाइक करने के लिये क्लिक करें- <https://www.facebook.com/Jansatta>

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- <https://twitter.com/Jansatta>